स्वाधीनता घंटे

हालांकि अब हमें स्वाधीनता घंटे की रिंग सुनाई नहीं देती, लेकिन 200 वर्षों से अधिक समय से लोगों ने इस घंटे के संदेश का भावन किया है। कोई भी इस चीज़ को जिसे हम स्वाधीनता कहते हैं, साकार रूप में नहीं देख सकता। लेकिन लोग स्वाधीनता घंटे को, इस महत्वपूर्ण भावना के प्रत्यक्ष प्रतीक रूप में लेते आये हैं ।

मूलतः इसे पेंसिलवेनिया कोलोनी के स्टेट हाउस घंटे के तौर पर लगवाया गया था, जिसकी स्थापना विलियम पेन ने धार्मिक सहिष्णुता और प्रतिनिधि सरकार के 'पवित्र प्रयोग' के रूप में की थी। जब यह घंटा लंदन से मंगवाया गया था उस समय लेविटिकस, अध्याय 25, श्लोक 10 के ये शब्द इसके ऊपर अंकित थे: "देश भर में, उसके तमाम निवासियों तक, स्वतंत्रता की घोषणा करो।" इन्ही सशक्त शब्दों पर घंटे का वर्तमान नाम पड़ा।

फ़िलाडेल्फ़िया पहुँच कर यह घंटा चटक गया। इसे पिघला कर दोबारा ढाला गया और फिर इसे स्टेट हाउस की मीनार पर लगाया गया।

1830 के दशक में, गुलामी उन्मूलन के लिए कार्यरत एक समूह ने पहली बार इसे स्वाधीनता घंटे का नाम दिया। गृहयुद्ध के बाद विभाजित राष्ट्र को नये सिरे से संगठित करने के लिए स्वाधीनता घंटे को पूरे देश में घुमाया गया।

मुख्यत: ताँबे और टिन से बना 2080 पौंड वज़न का घंटा छठवीं और मार्केट स्ट्रीट्स पर स्थित "लिबर्टी बेल सेंटर " में लगा है। घंटे के सामने की तरफ जो लंबी दरार है वह 90 वर्षा के लंबे इस्तेमाल की वज़ह से आयी दरार को भरने के प्रयास का नतीज़ा है। दुर्भाग्य से, यह घंटा 1846 से ख़ामोश पड़ा है जब यह दरार बढ़ कर इसके शीर्ष तक पहुंच गयी। फिर भी यह स्वतंत्रता का सशक्त प्रतीक है।

Hindi 8-10-08